19

जब मन बदला लेने को पुकारता है

(1 शमूएल 24-26; 2 शमूएल 1)

मैं इस पाठ को पढ़ने वाले हर व्यक्ति को तो नहीं जानता, परन्तु हर पाठक के बारे में इतना अवश्य जानता हूं कि मैं चाहे उनसे मिला हूं या नहीं, उनमें से हर किसी का मन किसी न किसी ने अवश्य दुखाया है। यह कई वर्ष पहले या हाल ही में जैसे कल हुआ हो सकता है, परन्तु आपको पीड़ा अवश्य हुई होगी। शायद किसी मित्र ने आपका भरोसा तोड़ा है। शायद किसी शिक्षक, कोच, या बॉस ने आपके साथ दुर्व्यवहार किया हो। शायद परिवार के किसी सदस्य ने आपके साथ दुर्व्यवहार किया हो। हो सकता है कि किसी जानकार ने आपका लाभ उठाया हो। शायद जीवन साथी ने आपको छोड़ दिया हो। शायद किसी शत्रु ने आपकी ज़िंदगी बर्बाद कर दी हो। सबका मन एक ही प्रकार से दुखा तो नहीं हुआ होगा, परन्तु दुखा अवश्य होगा।

एक पल के लिए अपने दुखी होने की सबसे बड़ी घटना पर विचार करें। मन की पीड़ा को याद करने की कोशिश करें। अब कल्पना करें कि उस नाज़ुक पल में मैं आपके पास आता हूं और आपको चमकीली धातु का एक डिज़्बा देता हूं। उस डिज़्बे के ऊपर एक लाल बटन है। मैं आपसे कहता हूं, ''यदि आप इस बटन को दबाएं, तो उस व्यक्ति को जिसने आपको दुखी किया है उतनी ही तकलीफ़ होगी जितनी इस समय आपको हो रही है। बटन दबाने की इस बात का आपके सिवाय किसी और को पता नहीं चलेगा।'' फिर मैं चला जाता हूं। मैं आपसे पूछता हूं: अपनी तकलीफ़ पर विचार करके ज़्या आप उस बटन को दबा देंगे? एक बात तो निश्चित है: हमारे आस-पास का संसार चीत्कार कर रहा है, ''बटन दबाओ! बटन दबाओ!'' बड़े-बड़े बैनरों पर लिखा है, ''मैं पागल नहीं हूं; मैं होश में हूं।'' फिल्म के पर्दे चिल्लाते हैं: ''आगे बड़ो। कुछ करो!'' टीवी विज्ञापन शोर मचाते हैं: ''ज़्या आपका नुज़्सान हुआ है? वकील करो हम एक-एक पाई वसूल कर लेंगे!''[1] लोग हर जगह बदला लेने की पुकार करते हैं; हम नायक उन्हीं लोगों को कहते हैं जिन्होंने अपने दमनकारियों को जैसे को तैसा दिया है। (अंतिम बार आपने कब किसी ऐसे व्यक्ति को देखा था जो अपनी दूसरी गाल फेरकर[2] ''नायक'' बना हो?)

बहुत मुश्किल है, है न? जब हम पर आरोप लगते हों, दुर्व्यवहार होता हो और हमारा दुरुपयोग होता रहे तो स्वाभाविक ही मन बदला लेने को पुकारता है। बदला लेने के बटन को दबाना हमारी स्वाभाविक प्रवृज़ि है। परन्तु मसीही व्यज़्ति के सामने सवाल है कि ''ज़्या *परमेश्वर* मुझे बटन दबाने देता?'' एक और प्रश्न है, ''यदि वह नहीं दबाने देगा तो हिसाब बराबर करने की मेरी इच्छा कैसे पूरी होगी?'' हम ऐसे प्रश्न का उज़र दाऊद के जीवन से अपने अध्ययन में थोड़ा-थोड़ा देने की आशा रखते हैं। हमारा विशेष ध्यान 1 शमूएल 24-26 पर रहेगा। इन पदों तथा 2 शमूएल 1 से मैं उन लोगों को तकलीफ़ पहुंचाने के लिए जिन्होंने हमें दुखी किया है, जोश से व्यवहार करने के चार सुझाव देना चाहता हूं।

स्रोत पर ध्यान करें (1 शमूएल 24)

कुछ दिन पहले की बात है, मैं और मेरी पत्नी किसी परिवार से मिलने गए थे जब किसी ने ऐसी टिप्पणी की जिससे यह संकेत मिलता था कि वह व्यज़्ति मुझे पसन्द नहीं करता था। उसकी टिप्पणी की प्रकृति से सब हंस पड़े। किसी ने कहा, ''केवल स्रोत पर ध्यान करो''; फिर हम उसके बाद सुधारने वाले विषयों पर आगे बढ़ गए।

जब आप छोटे बच्चे थे, तो कभी न कभी आपने अपने माता-पिता को बताया होगा कि किसी ने आपको गाली निकाली है, और उनका जवाब था, ''यह देखो कि किसने कहा है और भूल जाओ।'' उनके कहने का अर्थ था कि यदि तुम इसे गंभीरता से लोगे कि वह गलत या बुरी बात किसने कही, तो तुज़्हें अहसास हो जाएगा कि चिंता करने की कोई बात नहीं है।

इसी सिद्धांत को दाऊद की परिस्थिति पर लागू करें। उसे तकलीफ़ देने वाला कौन था? एक सनकी राजा जो अपना ही सबसे बड़ा शत्रु था।[2]

पिछली बार जहां हमने यह कहानी छोड़ी थी, दाऊद और उसके आदमी शाऊल की सेना से बड़ी मुश्किल से बचे थे। पलिश्तियों से लड़ने के लिए राजा के जाने के बाद, ''वहां से दाऊद चढ़कर एनगदी के गढ़ों में रहने लगा'' था (1 शमूएल 23:29)।

एनगदी यरूशलेम के दक्षिण पूर्व की ओर लगभग पैंतीस मील, मृत सागर के पश्चिमी तट के बीच में स्थित है। वहां की सैर करने वाले लोग इसकी सुन्दरता का वर्णन करते हैं। एक फव्वारे से जो समुद्र से छह सौ फुट ऊंचा है, एक चमकदार चश्मा निकलता है जो रेगिस्तान की ओर बहता है। वहां पांच जल प्रपात (वाटर फाल्स), साफ पानी के तालाब, हरे-भरे पेड़-पौधे और रंग बिरंगे फूल हैं। इस मरुद्वीप में एक ढलान से पानी आता है। दाऊद और उसके आदमियों ने थकावट दूर यहीं अपने आप को तरो-ताज़ा किया होगा।

परन्तु एनगदी में दाऊद का ''विश्राम तथा ताज़ा होना'' थोड़ी देर के लिए होगा। अध्याय 24 आरज़्भ होता है: ''जब शाऊल पलिश्तियों का पीछा करने लौटा, तब उसको यह समाचार मिला, कि दाऊद एनगदी के जंगल में है। तब शाऊल समस्त इस्राएलियों में से तीन हज़ार को छांटकर दाऊद और उसके जनों को बनैले बकरों की चट्टानों पर खोजने लगा'' (24:1, 2)।

यह हमें परेशान करने वाली एक आयत तक ले आता है: ''जब वह मार्ग पर के भेड़शालों के पास पहुंचा जहां एक गुफ़ा थी, तब शाऊल दिशा फिरने को उसके भीतर गया'' (24:3क)। मूल भाषा इब्रानी में ''शाऊल अपने पैर ढकने के लिए अन्दर गया,'' है, जो प्रकृति की पुकार का कोमलता से उज़र देने के लिए एक इब्रानी शज़्द है।

जिस बात का शाऊल को पता नहीं था वह यह थी कि ''उसी गुफ़ा के कोनों में दाऊद और उसके जन बैठे हुए थे'' (24:3ख)।[3] यह जानकर कि शाऊल आ रहा है, दाऊद ने बहुत सी गुफ़ाओं में से एक में अपने लोगों के साथ छिपने का निर्णय किया होगा। (ये गुफ़ाएं इतनी बड़ी हैं कि उनमें दाऊद के साथियों के छह सौ से अधिक लोग छिप सकते होंगे।)

दाऊद के आदमी आनंदित थे! वे दाऊद के कान में कह रहे थे, ''सुन, आज वही दिन है जिसके विषय यहोवा ने तुझ से कहा था, कि मैं तेरे शत्रु को तेरे हाथ में सौंप दूंगा, कि तू उससे मनमाना बर्ताव कर ले'' (24:4क)। मुझे यह प्रभु की प्रतिज्ञा नहीं लगी। यह सज़्भव है कि परमेश्वर ने दाऊद से प्रतिज्ञा की थी और दाऊद ने अपने लोगों को इसके बारे में बताया था, परन्तु यह भी सज़्भव है कि वे लोग इतने सकारात्मक थे कि उन्होंने उद्धरण दिया कि शाऊल को मारने की दाऊद के लिए परमेश्वर की ही इच्छा है। प्रभु के मुंह में शज़्द डालने वाले ये लोग पहले या अंतिम नहीं थे।

आइए, बदला लेने के बारे में कुछ तथ्यों पर ध्यान देने के लिए रुकते हैं: (1) बदला लेने की आड़ में बैठे लोग उस समय की तलाश में होते हैं जब वह व्यज़्ति जिसने उन्हें हानि पहुंचाई होती है, नाज़ुक स्थिति में हो। उस गुफ़ा में मुझे शाऊल से अधिक कोई नाज़ुक परिस्थिति में नहीं लगता। इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि बदला लेने की शारीरिक विचारों की प्रेरणा से दाऊद के लोगों ने इसे परमेश्वर की ओर से मिला अवसर समझा। (2) यदि किसी ने आपका मन दुखाया है, तो आपके करीबी लोग ही आपको अवसर पाकर ''हिसाब बराबर'' करने के लिए उकसाएंगे। दाऊद के आदमियों की तरह ही ऐसा करने के लिए आपको कहने के उनके पास ढेरों कारण होंगे: ''उसे सबक सिखाना आवश्यक है''; ''उसे अपनी बनाई दवा का स्वाद चखा दो''; ''उसे इस तरह सिर पर चढ़ाना तुज़्हें महंगा पड़ेगा।''

दाऊद के आदमियों की तरह, वे इसमें परमेश्वर को भी ला सकते हैं: ''आखिर परमेश्वर ने तुज़्हें कुछ अधिकार दिए हैं''; ''निश्चय ही परमेश्वर आपसे पायदान की तरह काम करने की अपेक्षा नहीं करता!''

यहां कहानी एक नया मोड़ ले लेती है। 24:4 का अंतिम भाग कहता है, ''तब दाऊद ने उठकर शाऊल के बागे की छोर को छिपकर काट लिया।'' इस दृश्य की कल्पना करें! अपने आदमियों द्वारा शाऊल को मार डालने की बिनती के बावजूद, दाऊद ने उस अंधेरे में अपने चाकू से केवल शाऊल का कपड़ा ही काटा। वे एक दूसरे को कोहनियां मार रहे थे और दबे हुए मुंह से चीखने की आवाज़ सुनने को बेताब थे, जिससे उन्हें पता चलता कि राजा पर हमला हो गया है या उसकी गर्दन काट दी गई है, परन्तु उन्हें कोई आवाज़ नहीं

आई। कुछ ही क्षणों में दाऊद वापस आ गया, चाकू उसके हाथ में ही था, परन्तु उस पर कोई लहू का निशान नहीं था। ''ज़्या हुआ?'' ''तुमने ज़्या किया?'' दाऊद ने खीसें निकालते हुए शाऊल के शाही लिबास का कटा हुआ भाग पकड़ा हुआ था।

बहुत से प्रश्न मन में आते हैं। एक प्रश्न यह है कि ''यह कैसे हो सकता है कि दाऊद शाऊल के इतना निकट चला गया हो और शाऊल ने उसे देखा न हो या उससे उसकी आहट न आई हो?'' हो सकता है कि शाऊल ने गुफ़ा में जाते समय अपने बाहर के वस्त्र उतार कर एक किनारे में रख दिए हों। (मैं तो ऐसे ही करता।) परन्तु दाऊद ने बड़ी हिज़्मत से ऐसा कर दिया। एक और प्रश्न है, ''दाऊद ने उसके लिबास का टुकड़ा ही *ज़्यों* काटा?'' शायद इसका एक कारण यह था कि मन में पहले से ही वह शाऊल के सामने यह साबित करना चाहता था कि वह तो उसकी जान बज़्श सकता है, परन्तु शाऊल नहीं (24:11)। लेकिन सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न यह है कि ''मौका मिलने के बावजूद उसने शाऊल को *मारा* ज़्यों नहीं?'' इस प्रश्न का उज़र देने के लिए, आइए आगे बाइबल में पढ़ते हैं,

> इसके पीछे दाऊद शाऊल के बागे की छोर काटने से पछताया। और अपने जनों से कहने लगा, यहोवा न करे कि मैं अपने प्रभु से जो यहोवा का अभिषिज़्त है ऐसा काम करूं, कि उस पर हाथ चलाऊं, ज़्योंकि वह यहोवा का अभिषिज़्त है (24:5, 6)।

दाऊद यह विचार करके कि उसने ज़्या किया है ज़्यों परेशान हुआ? उसने शाऊल को कोई शारीरिक हानि नहीं पहुंचाई थी; उसने तो केवल उसके वस्त्र का एक टुकड़ा ही काटा था। कुछ लोगों का विचार है कि टुकड़ा इसलिए काटा था ज़्योंकि दाऊद ने वास्तव में अंधेरे में शाऊल की गर्दन काटने की योजना बनाई थी, परन्तु अंतिम क्षण में उसने अपना मन बदल लिया और केवल उसके वस्त्र का एक छोर ही काटा था। यकीनन यह सज़्भव है कि दाऊद पर शाऊल को मारने की परीक्षा आई थी। यदि कोई मुझे बार-बार मारने की कोशिश करता हो और कभी वह निहत्था मेरे हाथ आ जाए जबकि मेरे हाथ में तेज़ धार वाला चाकू हो, तो यदि मेरे मन में यह विचार न आए कि ''एक ही झटके की तो बात है फिर मेरे दिन फिर जाएंगे!''

परन्तु, बाइबल कहती है, ''दाऊद *शाऊल के बागे की छोर काटने से पछताया।*'' दाऊद के विवेक ने उसे उसके विचार के कारण नहीं बल्कि जो उसने किया था, उसके लिए दोषी ठहराया। दाऊद के बारे में मेरे मन में यह प्रभाव है कि वह एक निडर व्यज़्ति था; उसे खतरों से खेलना अच्छा लगता था। मेरा अनुमान है कि दाऊद ने राजा शाऊल को प्रभावित करने के लिए बच्चों की तरह उसके वस्त्र का थोड़ा सा भाग काटा होगा। परन्तु जब उसने इस पर विचार किया तो उसके विवेक ने उसे झकझोड़ा, ''तेरे लिए परमेश्वर के अभिषिज़्त को शारीरिक रूप में नुज़्सान पहुंचाना ही नहीं, बल्कि उसे हर प्रकार से *सज़्मान* देना भी आवश्यक है।''

इससे हम उस मुज़्य बात पर आ जाते हैं जो मैं अध्ययन के इस भाग में बताना चाहता

हूं कि दाऊद ने शाऊल को मारा ज़्यों नहीं। फिर से ध्यान दें कि उसने अपने आदमियों से ज़्या कहा: ''यहोवा न करे कि मैं अपने प्रभु से जो *यहोवा का अभिषिज़्त* है ऐसा काम करूं, कि उस पर हाथ चलाऊं, *ज़्योंकि वह यहोवा का अभिषिज़्त है*'' (24:6)। ''यहोवा का अभिषिज़्त'' पंज़्ति को रेखांकित कर लें। शाऊल का दाऊद की तरह ही शमूएल द्वारा तेल से अभिषेक हुआ था (तु. 1 शमूएल 10:1; 16:13)। ''अभिषिज़्त'' के लिए इब्रानी शज़्द ''मसायाह'' (उसका समानांतर यूनानी शज़्द ''ख्रिस्त'') है। दाऊद जानता था कि शाऊल का सज़्मान होना चाहिए, केवल इसलिए नहीं कि वह *कौन* था (एक निर्बल, सनकी, अवज्ञाकार आदमी), बल्कि इसलिए कि वह *ज़्या* था अर्थात वह ''परमेश्वर का मसीहा'' था!

बाइबल में हमें यही शिक्षा दी जाती है। अपने ऊपर नियुज़्त पुलिस अधिकारी का सज़्मान इसलिए नहीं कि वह कौन है (अर्थात हमारे जैसा एक आम इनसान), बल्कि इसलिए करें कि वह ज़्या है: ''तेरी भलाई के लिए परमेश्वर का सेवक'' (रोमियों 13:4)। ऐल्डरों का सज़्मान इसलिए नहीं किया जाता कि वे कौन हैं (साधारण लोग जो असाधारण काम करने का प्रयास कर रहे हैं), बल्कि इसलिए कि वे ज़्या हैं अर्थात उनके पद के कारण: जिन्हें ''पवित्र आत्मा ने ... अध्यक्ष ठहराया है; कि ... परमेश्वर की कलीसिया की रखवाली'' करें (प्रेरितों 20:28)।[4]

दाऊद को ''स्रोत का विचार'' करके यह अहसास हुआ कि शाऊल परमेश्वर का अभिषिज़्त था और उसे हानि नहीं पहुंचानी चाहिए! ध्यान दें कि दाऊद इस बात को मानने में किस प्रकार दूसरा मील चलता है: ''ऐसी बातें कहकर दाऊद ने अपने जनों को घुड़की लगाई, और उन्हें शाऊल की हानि करने को उठने न दिया'' (24:7)। यह दाऊद द्वारा शाऊल को मारने की ही बात नहीं थी बल्कि राजा को मारने की बात पर उसे अपने लोगों के साथ बात करनी थी। ''घुड़की लगाई'' के लिए मूल इब्रानी शज़्द संकेत देता है कि दाऊद ने अपनी बातों से अपने आदमियों को ''खूब डांटा।'' गुफ़ा के पीछे धीरे-धीरे काफी गरमा गरम बहस हो रही थी। दाऊद जिसका अपना जीवन भी शाऊल के दमनकारी आदेशों से पीड़ित था, ने अपने आदमियों को रोक दिया।

किसी से बदला नहीं लेने का अर्थ यही नहीं कि आप जवाबी कार्रवाई नहीं करते बल्कि इसका अर्थ यह भी है कि आप उस व्यज़्ति को हानि न पहुंचाने के लिए दूसरों को भी तैयार करते हैं। एक मण्डली जिसमें मैं प्रचार करता था, से मुझे लगता था कि मुझे त्यागपत्र दे देना चाहिए। मैं परेशान था, परन्तु मैं बिना विवाद के वहां से चुप चाप छोड़ देना चाहता था। परन्तु मण्डली के बहुत से लोगों को शक हो गया कि मेरे जाने के पीछे कारण कुछ और ही था और मैंने अपने आप को दूसरों को गड़बड़ न करने अर्थात ''आत्मा की एकता'' (इफिसियों 4:3) को सब बातों से प्राथमिकता देने के लिए मनाने की स्थिति में पाया। मैंने महसूस किया कि उस समय जब आप किसी से आहत होते हैं यह काम बहुत कठिन होता जाता है! परन्तु बदला न लेना इसका सबसे आवश्यक भाग है।

जब दाऊद अपने आदमियों को मना ही रहा था तो शाऊल गुफ़ा से निकल गया। दाऊद ने प्रवेश द्वार पर आकर देखा। जब शाऊल कुछ दूर चला गया, तो दाऊद ने बाहर

आकर आवाज दी, ''हे मेरे प्रभु, हे राजा!'' (24:8)।

मत्ती 18 में यीशु ने दूसरों के साथ हमारे सम्बन्ध के बारे में एक अनन्त सिद्धांत ठहराया: ''यदि तेरा भाई तेरा [तेरे विरुद्ध[5]] अपराध करे, तो जा और ... उसे समझा।[6] यदि वह तेरी सुने तो तूने अपने भाई को पा लिया'' (मत्ती 18:15)। परामर्श देने में, इसे ''सामना'' कहा जाता है। इसे सम्बन्ध बहाल करने का एक महत्वपूर्ण भाग माना जाता है। यह पीड़ित व्यक्ति की उसकी भावनाओं के अनुरूप सहायता करने के लिए भी आवश्यक है। यहां तक, दाऊद को शाऊल का सामना करने का कोई अवसर नहीं मिला था। परन्तु अंत में वह और उसका सताने वाला आमने-सामने आ गए।[7]

जब शाऊल ने मुड़कर देखा तो दाऊद ने झुककर जोश दिलाने वाला भाषण दिया:

> देख, आज तू ने अपनी आंखों से देखा है कि यहोवा ने आप गुफ़ा में तुझे मेरे हाथ सौंप दिया था; और किसी किसी ने तो मुझ से तुझे मारने को कहा था, परन्तु मुझे तुझ पर तरस आया; और मैंने कहा, मैं अपने प्रभु पर हाथ न चलाऊंगा; क्योंकि वह यहोवा का अभिषिक्त है। फिर, हे मेरे पिता, देख, अपने बागे की छोर मेरे हाथ में देख; मैंने तेरे बागे की छोर तो काट ली, परन्तु तुझे घात न किया; इससे निश्चय करके जान ले, कि मेरे मन में कोई बुराई वा अपराध की सोच नहीं है। और मैंने तेरा कुछ अपराध नहीं किया, परन्तु तू मेरे प्राण लेने को मानो उसका अहेर करता रहता है यहोवा मेरा और तेरा न्याय करे, और यहोवा मुझ से मेरा पलटा ले; परन्तु मेरा हाथ तुझ पर न उठेगा (24:10-12)।

आपको यह पूरा भाषण ध्यान से पढ़ना चाहिए। इसमें बहुत सी महत्वपूर्ण बातें हैं। दाऊद आपके लिए दुखी करने वाले व्यक्ति का सामना करने पर एक लघु-सेमिनार का संचालन कर रहा था। दाऊद दुरभावी और घृणित व्यक्ति नहीं था, परन्तु उसने इस तथ्य को भी छिपाने की कोशिश नहीं की कि उसे आहत किया गया था। उसका भाषण नियन्त्रित तथा आदरपूर्ण था; उसने राजा को ''अपना प्रभु,'' ''यहोवा का अभिषिक्त'' और ''मेरा पिता'' कहा।[8] उसने अपने आप को ''मरे हुए कुत्ते'' और ''पिस्सू'' के रूप में प्रस्तुत किया। उसने शाऊल के कार्यों की हर सम्भव संरचना की; शाऊल के उद्देश्यों का न्याय करने के बजाय उसने कहा कि कोई राजा के कान भर रहा है (24:9)। शाऊल तो बेवजह उसका पीछा कर रहा था, परन्तु दाऊद ने सबूत के साथ वजह बताई कि उसका अपने राजा को हानि पहुंचाने का कोई इरादा नहीं था।

परन्तु मैं आपका ध्यान विशेष रूप से इस बात पर दिलाना चाहता हूं कि जब दाऊद ने ''स्रोत पर विचार'' करना जारी रखा, तो उसने देखा कि उन सब घटनाओं को स्वयं परमेश्वर का समर्थन प्राप्त था। 24:10 में दाऊद के शब्दों पर ध्यान दें: ''*यहोवा* ने आज गुफ़ा में तुझे मेरे हाथ सौंप दिया था।'' दाऊद के आदमियों ने सुझाव दिया था कि परमेश्वर ने शाऊल को दाऊद के सुपुर्द कर दिया है ताकि वह उसे *मार* डाले। परन्तु दाऊद ने देखा कि परमेश्वर ने राजा को उसके हाथ में इसलिए दिया है ताकि दाऊद उसे *बचा* कर सिद्ध

कर सके कि वह शाऊल का शत्रु नहीं है।

जब कोई आपको कष्ट पहुंचाता है, तो ''स्रोत पर विचार'' करने के समय इस सद्भावना को नजरअंदाज न करें कि उस परिस्थिति में आपको बड़ा और अच्छा व्यक्ति बनाने के लिए परमेश्वर कार्य कर रहा है (नोट मज़ी 5:10-12)।

शाऊल स्पष्ट तौर पर दाऊद के व्यवहार से प्रभावित हो गया था।

> शाऊल ने कहा, हे मेरे बेटे दाऊद, ज्या यह तेरा बोल है? तब शाऊल चिल्लाकर रोने लगा। फिर उसने दाऊद से कहा, तू मुझ से अधिक धर्मी है; तू ने तो मेरे साथ भलाई की है, परन्तु मैंने तेरे साथ बुराई की। ... और अब, मुझे मालूम हुआ है कि तू निश्चय राजा हो जाएगा, और इस्राएल का राज्य तेरे हाथ में स्थिर होगा (24:16, 17, 20)।

यहां पहली बार शाऊल ने खुलकर माना था कि दाऊद ही अगला राजा होगा।

लगता है जैसे उनमें सुलह हो गई हो, ज्या आपको नहीं लगता? दाऊद के लिए यह राजाधानी में लौटने, राजा के महल में फिर से अपना स्थान पाने के लिए संकेत होना चाहिए था। परन्तु दाऊद जानता था कि बेशक उसे कुछ समय तो मिला है परन्तु वह चंचल बुद्धि राजा शाऊल पर विश्वास नहीं कर सकता था। अध्याय इन शब्दों के साथ समाप्त होता है: ''तब शाऊल अपने घर चला गया; और दाऊद अपने जनों समेत गढ़ों में चला गया'' (24:22ख); वे वहीं रहे जहां वे सुरक्षित थे।

हिसाब लगाएं
(1 शमूएल 25)

अध्याय 25 एक पहेली ही है। अध्याय 24 और 26 उन दो अवसरों के बारे में बताते हैं जब दाऊद शाऊल को मार सकता था परन्तु उसने उसे मारा नहीं। इन दो अध्यायों के बीच अध्याय 25 छिपा हुआ है, जो एक पति और उसकी पत्नी (नाबाल और अबीगैल) तथा दाऊद के साथ उनके व्यवहार को बताता है। अध्याय 25 को अध्याय 24 और 26 के बीच ज्यों रखा गया है जिनमें एक जैसी घटनाएं हैं? हम इसका जवाब यह दे सकते हैं कि ऐसा इसलिए है कि यह घटना इन दो घटनाओं के बीच में होने घटित होती है। परन्तु हम जानते हैं कि इतिहासकारों तथा जीवनी लेखकों को अपनी सामग्री का चयन सावधानी से करना चाहिए।[1] आम तौर पर किसी घटना के चुने जाने और उसे वहां लिखे जाने का कोई न कोई कारण अवश्य होता है।

मेरा मानना है कि अध्याय 25 को अध्याय 24 तथा 26 के बीच (1) बदला लेने के बारे में दाऊद की स्वाभाविक इच्छा दिखाने और (2) बदला लेने को अपने हाथ में लेने के बारे में उसे परमेश्वर की इच्छा के बारे में सिखाने के लिए रखा गया।

अध्याय 25 की पहली आयत शमूएल की मृत्यु तथा दाऊद और उसके आदमियों के पारान जंगल में चले जाने के बारे में बताती है। जंगल में दाऊद छह लोगों को नहीं खिला

सकता था जो उस समय छह सौ से कहीं कम थे। इसलिए दाऊद रक्षक का काम करने लगा। वह और उसके आदमी खुले मैदानों में चर रहे झुंडों की रक्षा करते थे (25:7, 8, 15, 16)। ध्यान दें मैंने कहा, ''दाऊद रक्षक का *कार्य* करने लगा,'' न कि ''रक्षक बनकर *धन कमाने की योजना में*'' (जैसा कुछ टीकाकार लिखते हैं)। ''रक्षक बनकर *धन कमाने की योजना में*'' बदमाशों द्वारा लोगों की ''रक्षा'' के लिए इस्तेमाल किया जाता है जिन्हें उनके आने से पहले रक्षा की कोई आवश्यकता नहीं थी। इसके विपरीत पारान जंगल में रक्षा की सचमुच आवश्यकता थी। वहां कोई बाढ़ नहीं थी; चारों ओर जंगली जानवर और जंगली लोग रहते थे; और भटके हुए मेमनों या बच्चों का शिकार हो जाने का खतरा रहता था।

एक आदमी जिसके झुंडों की दाऊद के आदमी रक्षा करते थे, उसका नाम नाबाल था और वह बड़ा धनी था। ''माओन में एक पुरुष रहता था जिसका माल कर्मेल में था।[10] और वह पुरुष बहुत बड़ा था,[11] और उस तीन हज़ार भेड़ें, और एक हज़ार बकरियां थीं; और वह अपनी भेड़ों का ऊन कतर रहा था'' (25:2)। परन्तु वह आदमी ऐसा नहीं था जिसे आप अपना पड़ोसी बनाना चाहते हों। वह ''पुरुष कठोर, और बुरे-बुरे काम करने वाला था'' (25:3)।[12] उसके बारे में उसके सेवक का कहना था, ''वह तो ऐसा दुष्ट है[13] कि उससे कोई बोल भी नहीं सकता'' (25:17)। वह शराबी भी था (25:36)।

उसके नाम, नाबाल का मूल अर्थ ''मूर्ख'' या ''बेवकूफ़'' है। किसी मां द्वारा अपने बच्चे का नाम ''मूर्ख'' रखने की कल्पना करना बड़ा कठिन है।[14] यह उसके बचपन के नाम का बिगाड़ था या शायद उसका यह नाम मज़ाक में रखा गया था। परन्तु अब उसका यही नाम चलता था। न केवल लोग, बल्कि उसकी पत्नी भी उसे इसी नाम से पुकारती थी (25:25)। इससे उसके स्वभाव का सही-सही पता चलता था।

अध्याय 25 के नाटक में एक और मुज़्य पात्र नाबाल की पत्नी है जिसका नाम अबीगैल था। उसके नाम का अर्थ ''अपने पिता का आनन्द'' है। आयत 3 कहती है, ''स्त्री तो बुद्धिमान और रूपवती थी।'' कितना अजीब संगम है! बाइबल में केवल चार स्त्रियों को ही ''सुन्दर'' कहा गया है,[15] जिनमें से अबीगैल एक है।

इस सुन्दर, बुद्धिमान स्त्री ने इस मूर्ख से विवाह कैसे कर लिया? जवाब है कि अबीगैल को इस बारे में कुछ कहना नहीं था, ज़्योंकि तब विवाह तो माता-पिता द्वारा तय किए जाते थे। हो सकता है कि अबीगैल के माता-पिता ने नाबाल की दौलत देखकर उसके साथ उसका विवाह किया हो। ज़्योंकि अबीगैल सुन्दर थी इसलिए नाबाल ने उससे विवाह कर लिया होगा। इस प्रकार सुन्दर स्त्री तथा क्रूर पुरुष का विवाह हो गया, परन्तु ''इसके बाद उनके जीवन में खुशी'' *नहीं* आई। अबीगैल के पास बढ़िया से बढ़िया कपड़े थे, अच्छे से अच्छे रथ पर सवार होती थी, शानदार दावतें दे सकती थी परन्तु यह भी तथ्य था कि उसका विवाह नीच, शराबी और मूर्ख आदमी से हुआ था।

अध्याय के आरज़्भ में ही, भेड़ों की ऊन कतरने का (25:2) अर्थात पर्व का समय था। भेड़ों की ऊन करतने के समय ऊन कतरने वालों के साथ-साथ झुंडों की रक्षा करने वालों का भी आभार व्यज़्त किया जाता था। जब दाऊद ने सुना कि नाबाल अपनी भेड़ों की ऊन कतर

रहा है तो उसने उस धनी मालिक के पास दस जवान भेज दिए। उसने अपने आदमी यह कहने के लिए भेजे:

> कि तू चिरंजीव रहे, तेरा कल्याण हो, और तेरा घराना कल्याण से रहे, और जो कुछ तेरा है वह कल्याण से रहे। ... तेरे चरवाहे हम लोगों के पास रहे, और न तो हम ने उनकी कुछ हानि की, और न उनका कुछ खोया गया। ... सो इन जवानों पर तेरे अनुग्रह की दृष्टि हो; ... इसलिए जो कुछ तेरे हाथ लगे वह अपने दासों और अपने बेटे दाऊद को दे (25:6-8)।

दाऊद के जवानों ने नाबाल के पास जाकर वही शब्द दोहराए, और ''सुनाकर चुप रहे'' (25:9)। उन्होंने रूम से सामान ले जाने वाले लड़के की तरह प्रतीक्षा की, फिर वहां हाथ पसारे खड़े रहे। दाऊद तथा नाबाल के बीच कोई वाचा नहीं बंधी थी और न ही कोई लिखित समझौता हुआ था जिसमें यह कहा गया हो कि उसने उसका कुछ देना है, जिस प्रकार ऐसा कोई लिखित नियम नहीं है जिसमें कहा गया हो कि आपको टिप देनी ही है। परन्तु जैसे आज समझाने की आवश्यकता नहीं है, वैसे ही उस समय भी लोग इस बात को समझते थे कि यदि आपको किसी ने विशेष सम्मान दिया है तो आपको उसका आभार व्यक्त करना चाहिए। हर संकेत है कि दाऊद और उसके आदमी इस बात के हकदार थे कि उन्हें नाबाल से कुछ न कुछ आवश्यक मिलता। बाद में, चरवाहों ने अबीगैल को बताया:

> ... वे मनुष्य हम से बहुत अच्छा बर्ताव रखते थे, और जब तक हम मैदान में रहते हुए उनके पास आया जाया करते थे, तब तक न तो हमारी कुछ हानि हुई, और न हमारा कुछ खोया गया; जब तक हम उन के साथ भेड़-बकरियां चराते रहे, तब तक वे रात दिन [वे चौबीस घण्टे उनकी रक्षा करते थे] हमारी आड़ बने रहे (25:15, 16)।

फिर दाऊद के सेवकों ने कुछ पुरस्कार पाने के लिए प्रतीक्षा की।

परन्तु नाबाल ने मूर्खता से (नीतिवचन 15:2; 18:6, 7; 29:11; आदि) उनका अपमान किया और कहा:

> दाऊद कौन है? यिशै का पुत्र कौन है? आज कल बहुत से दास अपने अपने स्वामी के पास से भाग जाते हैं। क्या मैं अपनी रोटी-पानी और जो पशु मैंने अपने कतरनेवालों के लिए मारे हैं लेकर ऐसे लोगों को दे दूं, जिनको मैं नहीं जानता कि कहां के हैं? (25:10, 11)।

नाबाल ने दावा किया कि उसने दाऊद के बारे में कभी सुना ही नहीं था और इससे यह संकेत मिला कि उसे दाऊद द्वारा की गई सेवा का कोई ज्ञान नहीं था। (''मैं तो केवल इतना ही जानता हूं कि वह एक भगौड़ा गुलाम होगा।'') परन्तु अबीगैल को पता था कि दाऊद कौन

था (तु. 25:28, 30), इसलिए यकीनन सज़्भावना है कि उसके पति को भी मालूम होगा। हो सकता है कि नाबाल के चरवाहे बीच में किसी समय घर आए होंगे और उन्होंने उसे अवश्य बताया होगा कि कौन लोग उनकी रक्षा कर रहे हैं। नाबाल की समस्या यह नहीं थी कि उसे पता नहीं था कि दाऊद कौन था; बल्कि उसकी समस्या यह थी कि वह एक लालची आदमी था जो दौलत हाथ से नहीं गंवाना चाहता था।

दूत दाऊद के पास लौट गए। मैं एक सिपाही के चिल्लाने की कल्पना कर सकता हूं, ''वे लोग वापस आ रहे हैं!'' भूख से परेशान दाऊद उनके आने की उत्सुकता प्रतीक्षा से कर रहा था। उसने अच्छे से पले हुए मेमने को भूनने के लिए आग जला रखी थी। उसके मुंह में पानी आ रहा था। परन्तु जब वे वापस गए, तो उनके हाथ खाली थे। ''ज़्या हुआ?'' दाऊद ने पूछा। जब उन्होंने सारी बात दाऊद को बताई, तो वह क्रोधित हो गया। ''अपनी तलवारों की धार तेज़ कर लो!'' दाऊद ने अपने आदमियों को चिल्लाते हुए आदेश दिया।

> मैंने जो जंगल में उसके सब माल की ऐसी रक्षा की कि उसका कुछ भी न खोया, यह नि:संदेह व्यर्थ हुआ; ज़्योंकि उसने भलाई के बदले मुझ से बुराई ही की है। यदि बिहान को उजियाला होने तक उस जन के समस्त लोगों में से एक लड़के[16] को भी मैं जीवित छोड़ूं, तो परमेश्वर मेरे सब शत्रुओं से ऐसा ही, वरन इस से भी अधिक करे (25:21, 22)।

दाऊद का चेहरा उसके बालों की तरह लाल होते देर नहीं लगी, चार सौ सशस्त्र आदमियों के साथ वह नाबाल के घर की ओर चल पड़ा!

याद रखें कि नाबाल ने कोई कानून या किसी प्रकार की वाचा नहीं तोड़ी थी। न उसने दाऊद को किसी प्रकार की धमकी दी थी और न दाऊद को उससे कोई खतरा था। उसने तो केवल (1) दाऊद का अपमान किया था और (2) दाऊद द्वारा की गई सेवा के लिए उसका आभार व्यज़्त नहीं किया था। ज़्या आप किसी वेटर को टिप न दे पाने पर उसके आपके पीछे पिस्तौल लेकर आने की कल्पना कर सकते हैं? (मैंने ऐसे लोगों से अपमान सहा है जिन्हें लगता था कि मैंने उन्हें पर्याप्त टिप नहीं दी, परन्तु मारने की कोशिश कभी किसी ने नहीं की!) जो भी हो आप इस पर ध्यान दें कि दाऊद कुछ ज़्यादा ही प्रतिक्रिया कर रहा था। चार सौ आदमी (और दाऊद) नाबाल और उसके सेवकों को मारने के लिए जा रहे थे, वे एक कॉकरोच को बंदूक से मारने के लिए जा रहे थे! यह भी याद रखें, कि नाबाल ने मृत्यु दण्ड के योग्य कोई काम नहीं किया था, इसलिए दाऊद जो कर रहा था वह *हत्या* की योजना ही थी जिसे पहले से मन में ठानी हुई हत्या कहा जा सकता है।

यहां पर बहुत से टीकाकार अपने सिर हिलाते हैं। ''यह मानने में नहीं आता! यह वही आदमी है जिसने उस राजा का प्राण बज़्श दिया था जो दाऊद के खून का प्यासा था। परन्तु अब वह एक ऐसे आदमी को मारने की योजना बना रहा था जिसने उसे 'धन्यवाद' नहीं कहा था! दाऊद के व्यज़्तित्व में अचानक आए इस परिवर्तन को ज़्या कहा जा सकता है?'' मुझे नहीं लगता कि उसके व्यज़्तित्व में कोई परिवर्तन हुआ है। मेरे विचार से अध्याय 25 में

हमें दाऊद की *स्वाभाविक* प्रतिक्रिया मिलती है। यदि शाऊल परमेश्वर का अभिषिज़्त न होता, तो वह शाऊल के साथ ऐसा ही व्यवहार करना *पसन्द करता,*[17] अर्थात उसने शाऊल को मार दिया *होता*। इसके अलावा मेरा विचार है कि उसने जो कुछ कर सकता था, किया था और नाबाल की अपमानजनक बातें उनमें हाथी की पूंछ ही थीं। उसने सोचा होगा, ''शाऊल से तो मुझे दुर्व्यवहार सहना ही है, पर इस 'व्यर्थ के पुत्र' से ज़्यों सहूं!''

यद्यपि दाऊद ने बदला लेने के बारे में एक विशेष सबक सीखा था कि परमेश्वर के अभिषिज़्त से बदला नहीं लेना चाहिए परन्तु उसने यह सीधा सा सबक नहीं सीखा था कि चाहे कोई भी हो उससे बदला लेने का काम अपने हाथों में नहीं लेना चाहिए।

जब दाऊद अपने आदमियों को कत्लेआम करने के लिए तैयार कर रहा था, तो नाबाल के सेवकों में से एक ने जाकर अबीगैल को दाऊद की योजना के बारे में बता दिया। याद रखें कि अबीगैल अपनी शादी से खुश नहीं थी। उसके पास एक मूर्ख पति के साथ जीवन बिताने के अलावा कोई और चारा नहीं था। जब उसने सुना कि दाऊद अपने चार सौ सशस्त्र आदमियों के साथ आ रहा है, तो थोड़ी सी मुस्कुराहट के साथ उसकी आंखें झपकी होंगी और उसने कहा होगा, ''मेरे ज़्याल से मुझे अपने कमरे में जाकर अपने पति के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।''[18] तीस या चालीस मिनट या एक घण्टे बाद उसके बाहर आने तक सब कुछ खत्म हो जाना था। वह कुछ महीने शोक के वस्त्र पहनती और फिर उस क्षेत्र की सबसे धनी विधवा होने का आनन्द लेती और कोई उस पर आरोप भी नहीं लगा सकता था!

परन्तु उसने इस प्रकार जवाब नहीं दिया। बल्कि उसने जल्दी से अपने पति का प्राण बचाने की योजना बनाई। उस योजना में उसका अपना प्राण जा सकता था, लेकिन वह इसके लिए तैयार थी। ज़्यों? ज़्योंकि नाबाल के साथ विवाह करते समय उसने परमेश्वर के सामने वचन लिया था (तु. मलाकी 2:14; मज़ी 19:6)। वह चाहे असज़्य था, या शराबी-कबाबी परन्तु था तो उसका पति, और उसने जीवन भर के लिए उससे विवाह किया था! आज झट से टूटने वाले विवाहों में, हमें अबीगैल के व्यवहार की कितनी आवश्यकता है! परमेश्वर आज भी कहता है, ''मैं स्त्री त्याग [अर्थात तलाक] से घृणा करता हूं'' (मलाकी 2:16), और यीशु आज भी कहता है, ''इसलिए जिसे परमेश्वर ने जोड़ा है, उसे मनुष्य अलग न करे'' (मज़ी 19:6)।

अबीगैल ने तुरन्त अपनी योजना पर कार्य किया। उसने उन चार सौ एक भूखे आदमियों का पेट भरने के लिए अपनी रसोई और गोदाम का सारा भोजन निकाल कर गधों पर लादा और दाऊद को ढूंढ़ने के लिए निकल पड़ी-अकेली स्त्री हत्या के इरादे से आ रही सेना का सामना करने के लिए जा रही थी।[19]

उसने दाऊद और उसके आदमियों को एक घाटी में रास्ते में ही रोक लिया। वह अपने गधे से उतरकर दाऊद की सेना के मार्ग में आकर उनके सामने गिर गई। मैं दाऊद को जो कदमताल करते हुए, खूनी मार्च के लिए आगे बढ़ने को उत्सुक है, अपने आदमियों को रोकने के लिए हाथ से इशारा करते स्तज़्ध देखने की कल्पना कर सकता हूं। दाऊद के सामने घुटने टेक अबीगैल ने बाइबल में मिलने वाले सबसे शानदार आग्रहों में से एक

किया। (मुझे लगता है कि अपने पति के लिए उसने पहली बार क्षमा नहीं मांगी थी; उसने पहले भी उसकी बकवास के कारण किसी और से क्षमा मांगी होगी!)

अबीगैल ने अपनी बातचीत में उसकी नासमझी की पूरी ज़िम्मेदारी अपने ऊपर ले ली (25:24; 25:28 भी देखें)। दाऊद के लिए यह बात व्याकुल करने वाली थी। एक तो यह नाबाल जैसे मूर्ख को मारने की और दूसरी ओर एक सुन्दर स्त्री को मारने की बात थी।[20] उसने दाऊद से अपनी लाई हुई भेंटें ग्रहण करने की बिनती की (25:27)। अपनी पूरी बातचीत के दौरान उसने दाऊद के प्रति बड़ा सम्मान दिखाया। (उसने दाऊद को बारह बार ''अपना प्रभु'' और अपने आप को छह बार ''तेरी दासी'' कहा!) उसने यह भरोसा जताया कि परमेश्वर दाऊद के साथ होगा (25:28-31)।[21] उसकी बातें किसी का क्रोध कम करने के इच्छुक किसी भी व्यक्ति के लिए एक उदाहरण हैं।

अबीगैल ने जो सबसे महत्वपूर्ण बात की वह यह थी कि इस क्रोधी व्यक्ति को अपनी योजना के *परिणामों* पर विचार करने के लिए बहुत पहले विवश कर दिया।

> अब, ... यहोवा ने जो तुझे खून से और अपने हाथ के द्वारा अपना पलटा लेने से रोक रखा है, इसलिए अब तेरे शत्रु और मेरे प्रभु की हानि के चाहने वाले नाबाल ही के समान ठहरें। ... इसलिए जब यहोवा तुझे इस्राएल पर प्रधान करके ठहराएगा,[22] ... तब तुझे इस कारण पछताना न होगा, वा मेरे प्रभु का हृदय पीड़ित न होगा कि तू ने अकारण खून किया, और मेरे प्रभु ने अपना पलटा आप लिया है। ... (25:26, 30, 31)।

अबीगैल ने कहा, ''यहोवा तुझे इस्राएल का प्रधान करके ठहराएगा, तब तुझे इस कारण पछताना न होगा व मेरे प्रभु का हृदय पीड़ित न होगा कि तू ने अकारण खून किया, और अपना पलटा आप लिया है।''

दाऊद की प्रतिक्रिया से पता चलता है कि ''परमेश्वर के मन के अनुसार एक पुरुष'' उसे क्यों कहा जाता है। उसका मन सीखने वाला था; उसका मन संवेदनशील था।[23] उसने कहा: ''इस्राएल का परमेश्वर यहोवा धन्य है, जिसने आज के दिन मुझ से भेंट करने के लिए तुझे भेजा है! और तेरा विवेक धन्य है, और तू आप भी धन्य है, कि तू ने मुझे आज के दिन खून करने और अपना पलटा आप लेने से रोक दिया है'' (25:32, 33)। दाऊद जिसके सिर पर खून सवार था, यह महत्वपूर्ण सबक सीख रहा था जो उसे राजा के रूप में सीखना आवश्यक था कि हिंसा हिंसा को जन्म देती है; जबकि, संयम से शांतिपूर्ण हल निकल सकता है।

बुद्धिमान सुलैमान ने कहा था, ''मूर्ख को उसकी मूर्खता के अनुसार उज़र न देना ऐसा न हो कि तू भी उसके तुल्य ठहरे'' (नीतिवचन 26:4)। यह बात उसने अपने पिता दाऊद से ही सीखी होगी क्योंकि दाऊद एक मूर्ख को मूर्खतापूर्ण ढंग से उज़र देने ही वाला था।

कहते हैं कि ''बदला लेकर आगे नहीं बढ़ा जा सकता।'' स्पष्टतया लोगों से बदला लेने के हमारे प्रयास हम पर ही भारी पड़ते हैं और दूसरे का कुछ बिगाड़ने के बजाय हम अपने

आप को ही हानि पहुंचाते हैं। एक बार की बात है मुझे लगता था कि एक कार डीलर ने मेरे साथ अच्छा व्यवहार नहीं किया है। मैंने सोचा ''उसे बताऊंगा जरूर!'' ''अब मुझे उससे कोई काम नहीं पड़ता!'' आखिर मुझे यह समझ आ गया कि उस छोटे से नगर में जहां मैं रहता था, केवल वही एक डीलर था जो मेरी कार की वारन्टी कज़्पनी से दिलवा सकता था।

अगली बार जब कभी आप किसी से बदला लेने की परीक्षा में पड़ें, तो दस (या बीस या सौ या जितनी बार भी आवश्यक हो) हिसाब लगाएं, फिर अपनी प्रतिष्ठा, मन की शांति, और अपनी आत्मा के लिए ''बदला लेने के महंगे दाम का हिसाब लगाएं।''

अध्याय 25 की कहानी जल्दी से समाप्त हो जाती है। जब अबीगैल घर लौटी, तो वह नाबाल को नहीं बता सकी कि ज़्या हुआ था ज़्योंकि वह नशे में धुत था (25:36)।[24] अगले दिन, जब उसे होश आया तो उसने बताया, और उसे दिल का दौरा पड़ गया।[25] कुछ दिन बाद वह मर गया।[26] जब दाऊद ने सुना, तो उसने कहा, ''धन्य है यहोवा जिसने ... अपने दास को बुराई से रोक रखा; और यहोवा ने नाबाल की बुराई को उसी के सिर पर लाद दिया है'' (25:39)।

दाऊद अबीगैल से बहुत प्रभावित हुआ था, जो सुन्दर और साधन सज़्पन्न थी, इसलिए उसने उसके पास विवाह का प्रस्ताव लेकर अपने सेवकों को भेजा।[27] अबीगैल ने दाऊद का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया और वे दोनों पति-पत्नी बन गए। इस कहानी का आरज़्भ दाऊद द्वारा भोजन की इच्छा के साथ हुआ था; और अंत दाऊद को एक अच्छी पत्नी मिलने के साथ होता है।[28]

दाऊद ने उस दिन कुछ महत्वपूर्ण सबक सीखे। पहला, निजी बदला लेना उपयोगी नहीं है। दूसरा, यदि आप बदला लेना परमेश्वर पर छोड़ देते हैं, तो वह सब कुछ सही कर देगा। ये ऐसे सबक हैं जो हम में से हर एक को सीखने चाहिए।

प्रभु पर छोड़ दें
(1 शमूएल 26)

अबीगैल से सीखे सबकों की दाऊद को शीघ्र ही आवश्यकता पड़ गई। एक बार फिर उसे जीपियों ने धोखा दिया (26:1) और वह शाऊल के हाथ दोबारा आने वाला था।[29] शाऊल और उसकी सेना ने हकीला नामक उसी पहाड़ी पर छावनी डाली थी जहां जीपियों ने अंतिम बार दाऊद को देखा था।[30] जब दाऊद ने सुना कि शाऊल उसके पीछे पड़ा हुआ है तो उसे यकीन नहीं हुआ कि शाऊल फिर अपनी प्रतिज्ञा से मुकर गया है। जासूसों ने खबर की पुष्टि की, परन्तु दाऊद स्वयं देखने के लिए गया।

रात का समय था जब दाऊद और उसके कई आदमी वहां पहुंचे,[31] परन्तु चांदनी होने के कारण निकट की पहाड़ी से उन्होंने देख लिया कि शाऊल कहां सोया हुआ है। दाऊद ने यह साबित करने के लिए कि शाऊल को नुज़्सान पहुंचाने का उसका कोई इरादा नहीं है एक अंतिम जोखिम भरा प्रयास करने का फैसला किया। दाऊद ने पूछा, ''मेरे साथ उस छावनी में शाऊल के पास कौन चलेगा?'' एक भानजे ने जिसका नाम अबीशै[32] था, कहा

''तेरे साथ मैं चलूंगा'' (26:6)।

शाऊल की छावनी में रेंगकर जाते हुए दाऊद और अबीशै किसी सिपाही को सावधान न पाकर चकित हुए होंगे। आयत 12 में टिप्पणी है कि शाऊल की सेना में सब पर ''यहोवा की ओर स ... भारी नींद समा गई थी।'' दोनों छावनी के केन्द्र में सोये हुए लोगों के ऊपर से सावधानीपूर्वक जाते हुए, वहां पहुंच गए जहां शाऊल सोया हुआ था और उन्होंने उसका भाला उसके सिर के पास ज़मीन में गाड़ दिया।[33] इससे पहले गुफ़ा में उन लोगों की तरह अबीशै ने भी इसे दाऊद के लिए शाऊल को मारने की परमेश्वर की इच्छा के प्रमाण के रूप में देखा (26:8) एक बार फिर दाऊद ने कहा कि वह शाऊल को कुछ हानि नहीं पहुंचा सकता ज़्योंकि वह ''यहोवा का अभिषिक्त'' था (26:9; 26:11 भी देखें)।

परन्तु इस बार दाऊद ने इसमें एक और विचार जोड़ दिया। जो नाबाल और अबीगैल से सामना करने से उसे महत्वपूर्ण सबक मिला था कि बदला लेना परमेश्वर के हाथ में छोड़ दिया जाए।[34] ''फिर दाऊद ने कहा, यहोवा के जीवन की शपथ यहोवा ही उसको मारेगा; वा वह अपनी मृत्यु से मरेगा; वह लड़ाई में जाकर मर जाएगा'' (26:10)। अन्य शब्दों में, ''शाऊल या तो नाबाल की तरह प्रभु की मार से 'स्वाभाविक मौत' मर जाना था, या युद्ध में मर जाना था, परन्तु एक बात पक्की है कि अंत में परमेश्वर सब हिसाब बराबर कर देगा।'' (बाद में, दूसरी सम्भावना सही साबित हुई ज़्योंकि शाऊल युद्ध में मारा गया।)

दाऊद ने अबीशै से कहा, ''अब उसके सिरहाने से भाला और पानी की झारी उठा ले, और हम यहां से चले जाएं'' (26:11)। वे छावनी में से बड़ी सावधानी से निकलकर पहाड़ी के नीचे, घाटी के उस पार नज़दीक के पहाड़ की चोटी पर गए। वहां दाऊद ने अब्नेर को आवाज़ दी,[35] जो राजा की रक्षा के लिए उसके पास सो रहा था: ''इस्राएल में तेरे तुल्य कौन है ?[36] तू ने अपने स्वामी राजा की चौकसी ज़्यों नहीं की ? एक जन तो तेरे स्वामी राजा को नाश करने घुसा था। ... और अब देख, राजा का भाला और पानी की झारी जो उसके सिरहाने थी वे कहां हैं ?'' (25:15, 16)। दाऊद यह कहना चाहता था कि वह शाऊल की सेना से बढ़कर उसका मित्र है। ज़्योंकि अब्नेर ने या सेना ने नहीं बल्कि उसी ने अबीशै को राजा को मारने से रोका था।

शाऊल ने दाऊद की आवाज पहचान ली और पुकार उठा, ''हे मेरे बेटे, ज़्या यह तेरा बोल है ?'' (26:17)। दाऊद ने फिर से सबूत के तौर पर कि वह शाऊल का शत्रु नहीं है, उसका भाला और जग (झारी) लेकर अपने निर्दोष होने की बात शाऊल के सामने कही। उसने कहा:

> अब मेरा प्रभु राजा, अपने दास की बातें सुन ले। यदि यहोवा ने तुझे मेरे विरुद्ध उसकाया हो [तुझ पर दण्ड देने वाली आत्मा भेजकर[37]], तब तो वह भेंट ग्रहण करे; परन्तु यदि आदमियों ने ऐसा किया हो,[38] तो वे यहोवा की ओर से शापित हों, ज़्योंकि उन्होंने अब मुझे निकाल दिया कि मैं यहोवा के निज भाग में न रहूं, और उन्होंने कहा है कि जा, पराए देवताओं की उपासना कर। इसलिए अब मेरा लोहू यहोवा की आंखों की ओट में भूमि पर न बहने पाए; इस्राएल का राजा तो एक पिस्सू

ढूंढ़ने आया है, जैसा कि कोई पहाड़ों पर तीतर का अहेर करे (26:19, 20)।[39]

दाऊद की सबसे बड़ी चिंता यह नहीं थी कि वह एक भगौड़े की तरह रहने को विवश किया गया था बल्कि यह थी कि वह परमेश्वर की आराधना के लिए परमेश्वर के बाकी लोगों के साथ तज्बू के पास नहीं जा सकता था! उसका व्यवहार हम में से कइयों के विपरीत जो अपने भाइयों तथा बहनों के साथ इकट्ठा होने से चूकने का बहाना ढूंढ़ते हैं ''जब लोगों ने मुझ से कहा, कि हम यहोवा के भवन को चलें, तब मैं *आनन्दित* हुआ'' (भजन संहिता 122:1)। जब वह नहीं जा पाता था तो दुखी होता था।

दाऊद ने अपनी हृदयस्पर्शी बातचीत में, अबीगैल से सीखे गए सबक का उल्लेख भी किया: ''*यहोवा* एक एक को अपने अपने धर्म और सच्चाई का फल देगा'' (26:23)।

फिर से लगा कि शाऊल को कुछ अहसास हुआ है। उसने कहा, ''मैंने पाप किया है''[40] और ''मैंने मूर्खता की।'' उसने बिनती की, ''हे मेरे बेटे दाऊद लौट आ; ... मैं फिर तेरी कुछ हानि न करूंगा'' (26:21)। उसने दाऊद को अपना ''बेटा'' कहना नहीं छोड़ा, परन्तु पिछली बार की तरह दाऊद ने उसे ''अपना पिता'' नहीं कहा (1 शमूएल 24:11)। दाऊद को मालूम था कि शाऊल ने उसकी पत्नी मीकल का विवाह किसी और से कर दिया है (1 शमूएल 25:44) इसलिए शाऊल अब उसका ससुर नहीं था; शाऊल के घर में दाऊद के लिए कोई स्थान नहीं था। दाऊद ने नहीं लौटने का साहस किया, और ''अपना मार्ग लिया, और शाऊल भी अपने स्थान को चला गया'' (26:25)।

बदला लेने के लिए दाऊद द्वारा सीखे गए ''परमेश्वर पर छोड़ दो'' के सबक से बड़ा सबक कोई और नहीं हो सकता। यह महत्वपूर्ण सच्चाई पुराने तथा नये दोनों नियमों में सिखाई गई है: व्यवस्थाविवरण 32:35, 36; इब्रानियों 10:30; आदि। इस सच्चाई का सबसे शज़्तिशाली प्रदर्शन समीह के जीवन में मिलता है। पतरस ने लिखा:

> ... मसीह भी तुज़्हारे लिए दुख उठाकर, तुज़्हें एक आदर्श दे गया है, कि तुम भी उसके चिह्न पर चलो। न तो उसने पाप किया, और न उसके मुंह से छल की कोई बात निकली। वह गाली सुनकर गाली नहीं देता था, और दुख उठाकर किसी को भी धमकी नहीं देता था, पर अपने आपको सच्चे न्यायी के हाथ में सौंपता था। (1 पतरस 2:21-23)।

मसीह ने ''पलटा लेना परमेश्वर के हाथ में छोड़ दिया'' और पतरस ने कहा कि ऐसा उसने हमारे लिए नमूना ठहराने के लिए किया था।

पौलुस ने रोमियों 12 अध्याय में यह चुनौती दी है। आयत 17 में यह प्रेरित कहता है, ''बुराई के बदले किसी से बुराई न करो।'' यह मैंने नहीं लिखा। यदि मैंने लिखा होता तो मैंने कहना था, ''जहां तक हो सके बुराई का बदला बुराई से न दो'' या ''*अधिकतर* लोगों को बुराई का बदला बुराई से न दो'' परन्तु पौलुस ने कहा, ''बुराई के बदले *किसी से* बुराई *न* करो।'' फिर उसने आगे कहा, ''जहां तक हो सके, तुम अपने भरसक सब मनुष्यों के साथ

मेल मिलाप रखो। हे प्रियो अपना पलटा न लेना [यहां फिर वही शब्द आया]; परन्तु [परमेश्वर के] क्रोध को अवसर दो, क्योंकि लिखा है, पलटा लेना मेरा काम है, प्रभु कहता है मैं ही बदला लूंगा'' (रोमियों 12:18, 19)। ध्यान दें कि यह कहीं नहीं कहा गया कि ''बुराई का बदला नहीं मिलेगा।'' इन आयतों में ज़ोर दिया गया है कि जो दूसरों को नुकसान पहुंचाते हैं ''उन्हें बदला मिलने वाला है'' परन्तु ''देने का'' अधिकार हमें नहीं। हम यह काम परमेश्वर के हाथ में छोड़ दें।

क्षमा कर और भूल जा (2 शमूएल 1)

अपने पाठ की समाप्ति करते हुए, आइए थोड़ी देर के लिए उस काल को जब दाऊद और उसके आदमी पलिश्तियों में रहते थे शाऊल के साथ दाऊद के सम्बन्ध से अंतिम सिद्धांत पर ध्यान देने के लिए छोड़ देते हैं। ''क्षमा कर और भूल जा'' कहना जितना आसान है इस पर अमल करना उतना ही मुश्किल है।

1 शमूएल 31 में, हम शाऊल द्वारा अपनी तलवार पर गिरकर आत्महत्या करने के बारे में पढ़ते हैं (आयत 4; देखें 1 इतिहास 10:4)। 2 शमूएल 1 में, दाऊद को राजा की मृत्यु का समाचार मिला। दाऊद के लिए आनन्द करने और तुरन्त उस आदमी के जो उसके खून का प्यासा था, सिंहासन पर बैठने की कोशिश करने का सुनहरा अवसर था। इसके बजाय दाऊद ने उसके लिए शोक किया और उसके सम्मान में एक सुन्दर गीत लिखा। पिछले एक पाठ में, हमने देखा था कि दाऊद का अपने मित्र योनातन के लिए प्रेम, इस शोक गीत में दर्शाया गया है। परन्तु हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि इस कविता में ''यहोवा के अभिषिक्त'' के रूप में शाऊल का नाम पहले मिलता है तथा राजा के बारे में और भी कई बातें कही गई हैं।

फिर दाऊद ने शाऊल और उसके पुत्र योनातन पर यह विलाप किया,[41] ...

''हे इस्राएल, तेरा शिरोमणी तेरे ऊंचे स्थान पर मारा गया।
हाय, शूरवीर क्योंकर गिर पड़े हैं!
गत में यह न बताओ,
और न अश्कलोन की सड़कों में प्रचार करना;[42] ...
हे गिलबो पहाड़ो,[43]
तुम पर न ओस पड़े, और न वर्षा हो,
और न भेंट के योग्य उपज वाले खेत पाए जाएं!
क्योंकि वहां शूरवीरों की ढालें अशुद्ध हो गईं,
और शाऊल की ढाल बिना तेल लगाए रह गई।[44]
जूझे हुओं के लोहू बहाने से, और शूरवीरों की चर्बी खाने से,
... न शाऊल की तलवार छूछी फिर आती थी।
शाऊल और योनातन जीवनकाल में तो प्रिय और मनभाऊ थे,
और अपनी मृत्यु के समय अलग न हुए;

वे उकाब से भी वेग से चलनेवाले,
और सिंह से भी अधिक पराक्रमी थे।
इस्राएली स्त्रियो, शाऊल के लिए रोओ,
वह तो तुम्हें लाल रंग के वस्त्र पहिनाकर सुख देता,
और तुम्हारे वस्त्रों के ऊपर सोने के गहने पहिनाता था। ...[45]
हाय, शूरवीर ज़्योंकर गिर गए,
और युद्ध के हथियार[46] कैसे नाश हो गए हैं!''
(2 शमूएल 1:17, 19-24, 27)।

जनाज़े पर जाने वाले लोग कभी-कभी मरने वाले की तारीफ़ों के पुल बांधते नहीं थकते चाहे उसका जीवन कैसा ही रहा हो,[47] ''कितने मज़्कार होते हैं ऐसे लोग!'' ज़्या दाऊद भी शाऊल की प्रशंसा करके झूठ बोल रहा था या कपट बक रहा था? नहीं, दाऊद ने शाऊल के बारे में जो कुछ भी कहा, वह सत्य था। दाऊद ने उसकी बुरी बातों के बजाय केवल अच्छी बातों को ही स्मरण किया। दाऊद लापरवाह नहीं था। बल्कि वह उन सबसे अच्छे विकल्पों में से एक को काम में ला रहा था जिसे हम ''क्षमा कर और भूल जा'' या ''नेकी कर और दरिया में डाल'' का विकल्प कहते हैं।

संसार ने विलियम पेंटर का निष्कर्ष ''बदला लेना सुखद लगता है''[48] मान ही लिया लगता है। परन्तु बदला लेने से भी अच्छा कुछ और है और वह चोट और पीड़ा से ऊपर उठकर, क्षमा करना ... यीशु जैसे बनकर, जिसने प्रार्थना की थी, ''हे पिता, इन्हें क्षमा कर, ज़्योंकि ये जानते नहीं कि ज़्या कर रहे हैं'' (लूका 23:34) ... क्षमा करना है ताकि हमें भी क्षमा किया जाए (मत्ती 6:14, 15)।

यह सुझाव देते हुए मैं एक बहुत पुरानी कहावत ''नेकी कर और दरिया में डाल'' का इस्तेमाल कर रहा हूं। हम में से कोई भी ऐसा नहीं है जो अपने दिमाग से पूरी तरह किसी के दिए हुए ज़ख़्म को निकाल दे। परन्तु हम परमेश्वर की तरह ''भूल'' सकते हैं[49] अर्थात हम क्षमा किए जाने वाले के विरुद्ध कोई कार्रवाई न करके और ऐसा करते रहकर, कर सकते हैं। शाऊल पर अपना शोक व्यक्त करके दाऊद यही तो कर रहा था।

हॉपकिंसविल्ले, टेनिसी में लिटल रिवर चर्च ऑफ़ क्राइस्ट के सदस्य फ्रैंक और एलिजाबेथ मॉरिस ने क्षमा करने को बड़ी मुश्किल से पाया। 1982 के बड़े दिन से थोड़ा पहले उनके इकलौते पुत्र टैड को जो डेविड लिप्स्कॉम्ब कॉलेज का छात्र था, एक शराबी ड्राइवर ने मार डाला था। बुरी तरह से टूट चुके मॉरिस दम्पति ने अपने बेटे के कातिल, टॉमी पिगेज को मृत्यु दण्ड देने की इच्छा से बदला लेना चाहा। परन्तु उस हत्यारे पर आरोप बदल जाने के कारण उसका दण्ड कम हो गया। मॉरिस दम्पति घृणा के कारण अन्दर ही अन्दर दुखी थे। उनकी समस्या यह थी कि उन्होंने महसूस किया कि बदला लेने की उनकी प्यास बाइबल की शिक्षा के विपरीत है। उन्हें अपने आप पर क्रोध ही नहीं बल्कि शर्म भी आई।

दिलासा दिलाने वाली *रिवेंज रिडीम्ड* शीर्षक से लिखी पुस्तक उनकी भावनाओं के बारे

में ही है।[50] यह पुस्तक बताती है कि कैसे फ्रैंक और एलिजाबेथ की घृणा प्रेम में बदल गई, कैसे उन्होंने टॉमी पिगेज को क्षमा करना सीखा और कलीसिया के सदस्य बन गए। किताब के पीछे फ्रैंक और एलिजाबेथ की टॉमी पिगेज के साथ तस्वीर भी है।

यदि ऐसा दाऊद ने किया, यदि मॉरिस दज़्पज़ि ने किया, तो हम भी क्षमा कर सकते हैं। परमेश्वर हम सब की ''नेकी कर और दरिया में डाल'' की बात को पूरा करने के लिए सहायता करे।

सारांश

कुछ लोगों ने ध्यान दिया होगा कि मैंने बदला लेने के विचारों के लिए अपने चार सुझावों में घिसी पिटी बातों ''स्रोत पर विचार करें,'' ''हिसाब लगाएं,'' ''प्रभु पर छोड़ दें,'' ''क्षमा कर और भूल जा'' का इस्तेमाल किया है। ठप्पा बदनाम है; नये-नये लेखकों को बार-बार चेतावनी दी जाती है, ''किसी के जैसा बनने की कोशिश न करें। अपनी अलग पहचान बनाएं।'' किसी का ठप्पा लगाने के बारे में हम जो बात भूल जाते हैं वह किसी के जैसा बनना ही है ज़्योंकि उनसे बहुत हद तक पता चलता है कि हम ज़्या कहना चाहते हैं। चार सुझाव जो मैंने दिए हैं, ठप्पे या नकल हो सकते हैं, परन्तु इनसे उन बाइबल की महान सच्चाइयों का पता चलता है। उन सच्चाइयों को जिनके अनुसार यदि हम मन की शांति तथा मरने के बाद स्वर्ग में जाने की इच्छा रखते हैं, तो जीना हमारे लिए आवश्यक है।

आइए इस प्रवचन को हर सज़्भव व्यज़्तिगत तथा व्यावहारिक बनाएं। ज़्या अभी भी आपके पास बदला लेने का वह चमकीला डिज़्बा है जिसका उल्लेख हमने पाठ के आरज़्भ में किया था? यदि है तो आप बटन पर से अपना हाथ उठा लें: ज़्या किसी के प्रति जिसने अतीत में आपको हानि पहुंचाई हो, आपके मन में कड़वाहट है? समझ लें कि जब तक यह कड़वाहट रहेगी, तब तक वह व्यज़्ति जिसने आपको हानि पहुंचाई है, आपके जीवन तथा भावनाओं पर काबिज रहेगा। आपकी घृणा से उसे तो कुछ फर्क नहीं पड़ता परन्तु आपको अवश्य पड़ेगा। ''स्रोत पर विचार'' करके और हिसाब लगाकर इसे अपने मन से निकाल दें। सब कुछ प्रभु के हाथ में देने का निश्चय कर लें ताकि परमेश्वर अपने समय पर तथा स्थान में सब कुछ ठीक करे। अपनी ओर से, कड़वाहट के बोझ को उतार फैंकने अर्थात नेकी करके दरिया में डालने के लिए कोमल स्वभाव वाले होना सीखें।

प्रवचन तथा विज़ुअल-एड नोट्स

प्रवचन नोट्स: हम में से अधिकतर लोगों को पता नहीं है कि दुर्व्यवहार का सामना कैसे करना चाहिए ज़्योंकि हमें उसके साथ व्यवहार करना *सिखाया* नहीं गया। माता-पिता के रूप में हमारे लिए आवश्यक है कि हम अपने बच्चों को हानि होने पर प्रतिक्रिया करना सिखाएं। यह प्रवचन इसी दिशा में हो सकता है कि ''बदला लेने के बारे में अपने बच्चों को ज़्या सिखाएं।''

अबीगैल का व्यवहार इन अध्यायों की प्रमुख बातों में से एक है। उसके व्यवहार पर उपयोगी प्रवचन दिया जा सकता है।

शाऊल की बात ''मैंने मूर्खता की'' (1 शमूएल 26:21) उसके जीवन का उचित चित्रण है। ''स्वयं बना मूर्ख'' पर कितने ही अच्छे-अच्छे संदेश दिए गए हैं।

भजन संहिता 7 को अध्याय 24 और 26 में दाऊद के संदेशों से जोड़ा जा सकता है। अन्य बहुत से भजन दाऊद के शत्रुओं के बारे में ही हैं। उनमें से एक विशेष तौर पर शक्तिशाली भजन 22 है।

विज़ुअल-एड नोट्स: परिचय तथा निष्कर्ष के लिए एक डिब्बे पर लाल बटन लगाकर इस्तेमाल किया जा सकता है।

टिप्पणियां

[1]अमेरिकी लोग हर साल लगभग नौ करोड़ मुकदमे दायर करते हैं। एक समाचार समीक्षक ने हाल ही में ''मुकदमों के साथ अमेरिका का प्रेम-प्रसंग'' पर बात की। [2]परन्तु जब मैं कहता हूं, ''स्रोत पर ध्यान'' दें तो मेरे दिमाग में शाऊल की मानसिक स्थिति से कहीं अधिक बात होती है, जैसा कि बाद में हम देखेंगे। [3]शाऊल को दाऊद और उसके साथी दिखाई क्यों नहीं दिए? पहली बात तो यह कि अंधेरे में नज़र टिकाने के लिए कुछ समय लगा होगा। दूसरी बात, दाऊद और छह सौ दूसरे लोग दूर गुफ़ा में (''गुफ़ा के कोनो में'') थे और सम्भवतया चट्टान के कोनों के पीछे छिपे हुए थे। [4]एक और उदाहरण पर ध्यान दें: सरकारी कर्मचारियों को सिखाया जाता है कि वे आदमी को नहीं उसके पद को सलाम करें। [5]KJV तथा अन्य अनुवाद देखकर इस वाक्यांश को जोड़ें। [6]यीशु ने ऐसा ''अकेले में'' करने के लिए कहा था, परन्तु मैंने इन शब्दों को छोड़ दिया क्योंकि दाऊद की स्थिति में वे लागू नहीं होते। ऐसा कोई ढंग नहीं था कि दाऊद अपने प्राण का जोखिम उठाए बिना शाऊल से ''अकेले में'' जाकर बात कर पाता। [7]दाऊद ने इस स्थान पर इस समय शाऊल का सामना करने में जोखिम देखा। शाऊल और उसकी सेना उससे कुछ ही दूरी पर थी। यदि दाऊद असफल हो जाता तो उसे और उसके आदमियों को शीघ्र ही अपनी जान बचाने के लिए लड़ना पड़ता। सामना करने में यही जोखिम होता है। [8]यह इस बात के सम्मान के लिए हो सकता है कि शाऊल उम्र में बड़ा था, राजा होने के कारण कौमी या आत्मिक अगुआ था, और/या शाऊल उसका ससुर था। [9]किसी के जीवन की छोटी-छोटी बात को लिखना थका देने वाला और उबाऊ होगा। [10]यह कर्मेल माओन के निकट यहूदा में था। यह वह कर्मेल पर्वत नहीं है जो देश के उत्तरी भाग में समुद्र तट पर है।

[11]इब्रानी शब्द के अनुवाद ''बड़ा'' का मूल अर्थ ''भारी'' है। [12]बाइबल यह भी बताती है कि वह ''कालेबवंशी'' था। यह इस बात की ओर ध्यान दिलाता है कि वह कालेब के वंश में से था, जो यहोशू के साथ एक वफ़ादार सहकर्मी था, या (क्योंकि बाकी विवरण अनादरपूर्ण है) अपमानजनक शब्द इसका अर्थ हो सकता है कि वह ''कुत्ते जैसा'' (''कालेब'' का मूल अर्थ) था। [13]मूलत: ''बिलियाल का पुत्र,'' जिसका अर्थ है ''व्यर्थ का पुत्र।'' [14]आश्चर्यजनक बातें हुई हैं। बच्चों के कई बार नाम रखे गए हैं क्योंकि यह माता-पिता को अच्छा लगता था, इस बात का विचार किए बिना कि उन नामों का अर्थ क्या है। [15]बाकी तीन सारा, बतशेबा और वशती हैं। [16]यहां पर हिन्दी तथा KJV का अनुवाद सही है, परन्तु ''नर'' को प्राथमिकता दी जाती है। [17]शाऊल और तर्कहीन, स्वार्थी नाबाल में कई समानताएं बताई जा सकती हैं। याद दखें कि ''नाबाल'' का अर्थ ''मूर्ख'' है और अगले अध्याय में शाऊल ने अपने आप को यही कहा था (1 शमूएल 26:21)। [18]वह दाऊद और उसके

लोगों का हौसला बढ़ाने के लिए एक ओर खड़ी हो गई। [19]बाइबल टिप्पणी करती है, ''उसने अपने पति ... से कुछ न कहा'' (1 शमूएल 25:19)। ज़्या वह अधीन होने में नाकाम थी? वह नाबाल का प्राण बचाने जा रही थी, इसलिए मुझे संदेह है कि हम में से अधिकतर लोग उस पर दोष लगाएंगे। कई बार मेरी पत्नी ने मुझ से सलाह लिए बिना मेरा बचाव किया है, और मैंने इसके लिए उसकी तारीफ की है। [20]स्विंडॉल ने ''व्हट टू फीड एन एंगरी मैन'' (पृ.न., ति.न.), साउंड कैसेट में विशेष रूप से जोड़ा है ''इर्स्पेशियली वन विद द कॉक पॉट इन हर हैंड्स।''

[21]1 शमूएल 25:29 में अबीगैल की टिप्पणी विशेष रूप से यह कहने का विलक्षण ढंग है कि ''परमेश्वर तेरा जीवन सुरक्षित रखेगा और तेरे शत्रुओं का प्राण ले लेगा।'' [22]अबीगैल को कैसे पता चला कि दाऊद ही अगला राजा होगा? शायद उसने ''दाऊद ने लाखों को मारा'' वाला गीत सुना था और यह मान लिया था कि राजा बनने के लिए वही तर्कसंगत पसंद थी। शायद शाऊल द्वारा कही गई बात (1 शमूएल 24:20) सारे क्षेत्र में फैल गई थी। कुछ लोग मानते हैं कि उसके शब्द परमेश्वर की प्रेरणा से थे। [23]देखें याकूब 3:17. अबीगैल अपने पति से बात नहीं कर सकती थी परन्तु उसने दाऊद से बात की। [24]रिज़्क ऐचले ने टिप्पणी की है, ''प्रशंसा करने के लिए घर आने के बजाय अबीगैल नशे में डूबे आदमी के पास घर आई।'' ''ज़्यूटी एण्ड द बीस्ट'' (पृ.न.,ति.न.), साउंड कैसेट। [25]बाइबल कहती है कि ''वह पत्थर सा सुन्न हो गया।'' [26]इस बात पर चकित हुए बिना नहीं रहा जा सकता कि लूका 12:16-21 में यीशु द्वारा दिए धनी मूर्ख के दृष्टांत के लिए नाबाल कितना अच्छा उदाहरण था। [27]प्रस्ताव के लिए उसका जवाब था: ''तेरी दासी अपने प्रभु के सेवकों के चरण धोने के लिए लौंडी बने'' (25:41)। इस बात में स्विंडॉल की टिप्पणी थी, ''साथियो, यदि वह विवाह के लिए आपके प्रस्ताव को स्वीकार कर लेती है, तो मौका हाथ से न जानें दें!'' [28]1 शमूएल 25:43, 44 में विषमता पर ध्यान दें। आयत 44 में टिप्पणी है कि शाऊल ने मीकल का विवाह किसी और से कर दिया था; आयत 43 टिप्पणी करती है कि अबीगैल दाऊद की दूसरी पत्नी बन गई। दाऊद ने जब भी शाऊल से लिया, परमेश्वर ने ही उसे उसकी जगह दिया था। [29]कुछ आलोचकों का दावा है कि यह ''एक ही कहानी का दूसरा अंक'' है। परन्तु बाइबल का कोई ऐसा प्रमाण ऐसे किसी दावे की पुष्टि नहीं करता। दोनों कहानियों में बहुत सी भिन्नताएं हैं। [30]इस पहाड़ी की सही-सही स्थिति अज्ञात है। यह ''यशीमोन'' के निकट था जिसका अर्थ ''जंगल'' है। स्पष्टतया यह जीप के जंगल के निकट था (26:2)।

[31]इस तथ्य से पता चलता है कि शाऊल ने पहले ही ''उसके चारों ओर डेरे डाले हुए थे।'' (26:5)। [32]वह दाऊद की एक बहन (तु. 1 इतिहास 2:16), जरूयाह (26:6) का बेटा था। ज़्योंकि दाऊद दस बच्चों में सबसे छोटा था इसलिए यदि उससे बड़े नहीं तो उसी की उम्र के भतीजे-भतीजियां और भानजे-भानजियां होंगे। [33]भाला वहां आक्रमण के समय आसानी से इस्तेमाल में आने वाले हथियार के रूप में गाड़ा गया होगा। परन्तु सज़्भवतया इससे यह संकेत मिलता था कि छावनी का ''मुज़्यालय'' कहां है। भाले का इस्तेमाल स्पष्टतया शाऊल द्वारा अपने पद की प्रतिष्ठा संकेत के रूप में एक छड़ी की तरह किया जाता था। [34]अध्याय 24 में दाऊद ने प्रार्थना की कि परमेश्वर उसका न्याय करे (आयत 12); अब उसने इस बात में भरोसा जताया कि ऐसा ही होगा। [35]1 शमूएल 26:14 देखें। यद्यपि दाऊद ने अज़्नेर को सज़्बोधित किया, अज़्नेर ने इसे राजा को सज़्बोधन के रूप में लिया, ज़्योंकि दरबार लगने के समय सामान्यतया राजा को सीधे सज़्बोधित नहीं किया जाता था। [36]शाऊल की सेना में अज़्नेर के बराबर कोई नहीं था; शाऊल की विपज़ि के पूरे समय में उसके जैसा बहादुर और वफ़ादार कोई और नहीं था। दाऊद ने कहा कि अज़्नेर के मरने तक ''इस्राएल में आज के दिन एक प्रधान और प्रतापी मनुष्य मरा है'' (2 शमूएल 3:38)। [37]''परिचय'' वाला पाठ देखें। [38]अध्याय 24 में दाऊद ने इस सज़्भावना का उल्लेख किया। कुछ लोगों का मानना है कि भजन 7 कूश द्वारा शाऊल को उकसाने का संकेत देता है (इस भजन के परिचय वाला नोट देखें; कूश और शाऊल दोनों बिन्यामीनी थे)। [39]इन शब्दों का अर्थ यह नहीं है कि दाऊद के मन में क्षेत्रीय परमेश्वर की धारणा थी; बल्कि वह इस बात को मान्यता देता है कि परमेश्वर अपने लोगों में विशेष ढंग से था और परम पवित्र स्थान में परमेश्वर की उपस्थिति विशेष ढंग से थी। [40]शाऊल ने बाइबल में किसी और से भी अधिक ऐसा कहा, परन्तु इससे वह बदला नहीं लगता। यदि पाप का अंगीकार सच्चे मन फिराव से नहीं है, तो यह व्यर्थ होगा।

[41]आयत 18 में ''याशार नाम पुस्तक'' का उल्लेख है; यहोशू 10:13 में भी इसका उल्लेख है। स्पष्टतया यह प्रारम्भिक शायरी या काव्य संग्रह था। [42]गत और अश्कलोन पलिश्ती नगर थे; वे पलिश्तीन देश की अखंडता का प्रतीक हैं। [43]गिलबो पहाड़ों पर श्राप दिया गया था क्योंकि वहीं पर शाऊल और योनातन मारे गए थे। [44]ढालें चमड़े की बनी होती थीं और टूटने से बचाने के लिए उन पर तेल लगाया जाता था; अब शाऊल मर गया था इसलिए उसके हथियार यूं ही पड़े थे। [45]शाऊल के युद्ध जीतकर लौटने पर उसके सम्मान में ऐसा समारोह होता होगा। [46]सम्भवतया यह शाऊल तथा योनातन के हथियारों के बजाय उन्हीं के बारे में कहा गया है। [47]हम में से कोई भी सिद्ध नहीं है (रोमियों 3:23)। [48]लूइस कोपलैंड, सं., *पापुलर कुटेशन्स फ़ॉर ऑल यूज़ज़* (गार्डन सिटी, न्यू यॉर्क: डबलडे एण्ड कं., 1961), 392 में उद्धृत, विलियम पेंटर इन *द पैलेस ऑफ़ प्लय्यर*। [49]परमेश्वर ''हमारे पापों को याद नहीं करता'' परन्तु सर्वज्ञानी परमेश्वर होने के कारण, वह आज भी जानता है कि पाप हुआ था। [50]बॉब स्टीवर्ट, *रिवैन्ज रिडीज़्ड* (टैरी टाउन, न्यू यॉर्क: ज़्लेमिंग एच. रेवल कं., 1991)। इस पुस्तक को पढ़ने की हर एक से सिफ़ारिश की जाती है। मेरी जानकारी के अनुसार यही एकमात्र पुस्तक है जो साधारण लोगों के लिए लिखी और एक बड़े प्रकाशक घराने द्वारा छापी गई जिसमें कलीसिया तथा उद्धार की शर्तों की शिक्षा है।